कक्षा 10 · राजनीति विज्ञान

लोकतंत्र के परिणाम

अध्याय 5

MARUSHALA

भरत चौधरी और वनिता कुमारी ने बनाया · marushala.com

चार अध्याय पढ़ लिए। आज कोई नई बात नहीं
— आज हिसाब होगा। लोकतंत्र का रिपोर्ट कार्ड।

यात्रा का आख़िरी पड़ाव

> “अब जब कि हम लोकतंत्र की अपनी यात्रा के आखिरी पड़ाव पर हैं तब... कुछ सामान्य किस्म के सवाल पूछने का वक्त आ गया है — लोकतंत्र क्या करता है? हम उससे किन परिणामों की उम्मीद करते हैं? क्या वास्तविक जीवन में वह इन उम्मीदों को पूरा करता है?”
>
> पाठ्यपुस्तक, पृष्ठ 63

सूत्र — “समानता · गरिमा · फ़ैसले · टकराव · गलती-सुधार”

पाँच उम्मीदें — मैडम लिंगदोह की कक्षा से ★

#	लोकतंत्र सबसे बेहतर क्योंकि यह —
1	**नागरिकों में समानता** को बढ़ावा देता है
2	**व्यक्ति की गरिमा** को बढ़ाता है
3	इससे **फ़ैसलों में बेहतरी** आती है
4	**टकरावों को टालने-सँभालने** का तरीका देता है
5	इसमें **गलतियों को सुधारने की गुंजाइश** होती है

पर एक दुविधा — और यही अध्याय का इंजन है ★★

? **“सैद्धांतिक रूप में तो लोकतंत्र को अच्छा माना जाता है पर व्यवहार में इसे इतना अच्छा नहीं माना जाता।”**

इसीलिए — नतीजों पर **“ज़्यादा गहराई से विचार”** ज़रूरी। *(और सवाल वही अध्याय 1 वाला — **नैतिक कारण या युक्तिपरक भी?**)*

पहला कदम — दो वाक्य जो पूरा अध्याय हैं ★★

“लोकतंत्र शासन का एक स्वरूप भर है। यह कुछ चीज़ों को हासिल करने की स्थितियाँ तो बना सकता है पर नागरिकों को ही उन स्थितियों का लाभ लेकर अपने लक्ष्यों को हासिल करना होता है।”

और — “लोकतंत्र हमारी सभी सामाजिक बुराइयों को मिटा देने वाली **जादू की छड़ी भी नहीं** है।” ★**जैसे स्कूल किताब-शिक्षक-कक्षा देता है — पढ़ना तुम्हें ही पड़ता है।**

खाता 1

उत्तरदायी, ज़िम्मेवार और वैध शासन

“तानाशाही तो तेज़ फ़ैसले लेती है!”

आरोप

- गैर-लोकतांत्रिक सरकारों को **विधायिका का सामना नहीं**
- **बहुमत-अल्पमत के नज़रिए** का ख्याल नहीं
- न **बातचीत, न मोल-तोल** — इसलिए **तेज़**

★किताब का जवाब

- तेज़ फ़ैसला “ऐसा फ़ैसला भी हो सकता है **जिसे लोग स्वीकार न करें**”
- लोकतांत्रिक सरकार ने “**पूरी प्रक्रिया को माना है** इसलिए... लोग फ़ैसलों को मानेंगे और वे **ज़्यादा प्रभावी** होंगे”
- ★★“**लोकतंत्र में फ़ैसला लेने में जो वक्त लगता है वह बेकार नहीं जाता।**”

पारदर्शिता ★



नागरिक जाँच सकता है कि **“फ़ैसले लेने में नियमों का पालन हुआ है या नहीं”** — उसे **“न सिर्फ़ जानने का अधिकार है बल्कि उसके पास इसके साधन भी उपलब्ध हैं। इसे पारदर्शिता कहते हैं।”**

! “यह चीज़ अक्सर **गैर-लोकतांत्रिक सरकारों में नहीं होती।**”

पृष्ठ 66

तीन पैमाने — और मिला-जुला record

पैमाना	record
नियमित और निष्पक्ष चुनाव	✓ — पर “**सबको अवसर मिले**” ऐसे चुनाव में नहीं
खुली सार्वजनिक चर्चा	**“ज़्यादा अच्छा नहीं”**
सूचना का अधिकार	! **“खराब”**

भ्रष्टाचार — record “प्रभावशाली नहीं” ★**पर** — “गैर-लोकतांत्रिक सरकारें **कम भ्रष्ट… हैं — यह कहने का कोई आधार नहीं**।”

पर एक मामले में लोकतंत्र निर्विवाद विजेता ★★



"एक मामले में लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था **निश्चित रूप से** अन्य शासनों से बेहतर है: **यह वैध शासन व्यवस्था है।** यह सुस्त हो सकती है, कम कार्य-कुशल हो सकती है, इसमें भ्रष्टाचार हो सकता है... **लेकिन लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था लोगों की अपनी शासन व्यवस्था है।**"

★"वैध" = यहाँ **"जनता की नज़र में जायज़"** — क़ानूनी नहीं

“लोकतंत्र बेहतर है” मानने वाले (%)

प्रमाण — दक्षिण एशिया (SDSA, 2007) ★

देश	प्रतिशत
श्रीलंका	71
भारत	70
बांग्लादेश	69
नेपाल	62
! पाकिस्तान	37

“**पाकिस्तान को छोड़कर हर जगह** लोकतंत्र को तानाशाही के ऊपर वरीयता” — और ★**“अपने लिए समर्थन पैदा करने की लोकतंत्र की क्षमता भी लोकतंत्र का एक परिणाम ही है।”**

खाता 2

आर्थिक संवृद्धि

! पूरा चार्ट पढ़िए — आधा पढ़ना ही सबसे बड़ा जाल है

चार्ट 1 — विकास दरें (1950–2000) ★★

शासन	विकास दर
सभी लोकतांत्रिक शासन	3.95
सभी तानाशाहियाँ	4.42
★तानाशाही वाले गरीब देश	4.34
★लोकतंत्र वाले गरीब देश	4.28

चार्ट का असली निष्कर्ष ★★

≈ “जब हम **सिर्फ़ गरीब मुल्कों** के रिकॉर्ड की ही तुलना करते हैं तो **अंतर लगभग समाप्त हो जाता है।**”

और विकास **“कई कारकों”** पर निर्भर — **जनसंख्या का आकार · वैश्विक स्थिति · अन्य देशों से सहयोग · आर्थिक प्राथमिकताएँ** *(अर्थशास्त्र की याद)*

किताब का फ़ैसला

> “अकेले इसी कारण से **लोकतंत्र को खारिज नहीं किया जा सकता** … **लोकतांत्रिक व्यवस्था का चुनाव ही बेहतर है क्योंकि इसके अन्य अनेक सकारात्मक फ़ायदे हैं।** ”
>
> पाठ्यपुस्तक, पृष्ठ 67-68

खाता 3

असमानता और गरीबी

राजनीतिक बराबरी — पर आर्थिक खाई



लोकतंत्र **“राजनीतिक समानता पर आधारित”** है — चुनाव में **“हर व्यक्ति का वज़न बराबर।”**

! “लेकिन इसके साथ-साथ हम **आर्थिक असमानताओं को भी बढ़ता हुआ** पाते हैं” — **“मुट्ठी भर धनकुबेर”** आय-संपत्ति में **अनुपात से ज़्यादा हिस्सा** पाते हैं

चार्ट 2 — आय की असमानता (राष्ट्रीय आय में % हिस्सा) ★

देश	ऊपर के 20%	नीचे के 20%
दक्षिण अफ्रीका	64.8	2.9
ब्राज़ील	63.0	2.6
रूस	53.7	4.4
अमरीका	50.0	4.0
★डेनमार्क	34.5	9.6
★हंगरी	34.4	10.0

★डेनमार्क-हंगरी "**कहीं ज़्यादा बेहतर**" — यानी लोकतंत्र में असमानता **घटाई जा सकती है** — अपने आप नहीं घटती

और सबसे चुभने वाला विरोधाभास ध्यान

?

"हमारे मतदाताओं में **गरीबों की संख्या काफ़ी बड़ी** है इसलिए **कोई भी पार्टी उनके मतों से हाथ धोना नहीं चाहेगी। फिर भी** लोकतांत्रिक ढंग से निर्वाचित सरकारें **गरीबी के सवाल पर उतना ध्यान देने को तत्पर नहीं** जान पड़तीं..."

फ़ैसला — "वास्तविक जीवन में लोकतांत्रिक व्यवस्थाएँ आर्थिक असमानताओं को कम करने में **ज़्यादा सफल नहीं हो पाई हैं।**"

खाता 4

सामाजिक विविधताओं में सामंजस्य

लोकतंत्र का बड़ा गुण ★



“कोई भी समाज अपने विभिन्न समूहों के बीच के टकरावों को पूरी तरह और स्थायी रूप से नहीं खत्म कर सकता — पर हम इन अंतरों का **आदर करना सीख** सकते हैं... **इस काम के लिए लोकतंत्र सबसे अच्छा है।**”

गैर-लोकतांत्रिक व्यवस्थाएँ — “**आँखें फेर लेती हैं या दबाने की कोशिश** करती हैं।” *(उदाहरण — **बेल्जियम**, अध्याय 1)*

पर दो शर्तें — श्रीलंका की सीख ★★

शर्त 1

- “बहुमत को सदा ही अल्पमत का ध्यान रखना होता है”
- “तभी, सरकार जन-सामान्य की इच्छा का प्रतिनिधित्व कर पाती है”
- “बहुमत और अल्पमत की राय कोई स्थायी चीज़ नहीं होती”

★★शर्त 2

- “बहुमत के शासन का अर्थ धर्म, नस्ल अथवा भाषायी आधार के बहुसंख्यक समूह का शासन नहीं होता”
- “लोकतंत्र तभी तक लोकतंत्र रहता है जब तक प्रत्येक नागरिक को किसी न किसी अवसर पर बहुमत का हिस्सा बनने का मौका मिलता है”
- ! जन्म के आधार पर रोका जाए — तो शासन “समावेशी नहीं रह जाता”

खाता 5

गरिमा और आज़ादी

यहाँ लोकतंत्र सबसे आगे ★★



"व्यक्ति की **गरिमा और आज़ादी** के मामले में लोकतांत्रिक व्यवस्था **किसी भी अन्य शासन प्रणाली से काफ़ी आगे** है... **गरिमा और आज़ादी की चाह ही लोकतंत्र का आधार है।**"

दो प्रविष्टियाँ — दोनों अध्याय 3 से जुड़ती हैं

स्त्रियों की गरिमा

- "महिलाओं के लंबे संघर्ष के बाद अब माना जाने लगा है कि… गरिमा-समानता का व्यवहार लोकतंत्र की ज़रूरी शर्त है"
- सिद्धांत में स्वीकृति से संघर्ष "वैधानिक और नैतिक रूप से… आसान"
- "अलोकतांत्रिक व्यवस्था में यह बात संभव न थी"

जातिगत समानता

- लोकतंत्र ने "समान दर्जे और समान अवसर के दावे को बल" दिया
- भेदभाव के उदाहरण अब भी मिलते हैं —
- ★"पर इनके पक्ष में कानूनी या नैतिक बल नहीं होता"

निष्कर्ष

जाँच जो कभी ख़त्म नहीं होती

पूरी किताब का चरम-वाक्य ★★

“लोकतंत्र की एक खासियत है कि इसकी जाँच-परख और परीक्षा कभी खत्म नहीं होती… शिकायतों का बने रहना भी लोकतंत्र की सफलता की गवाही देता है। इससे पता चलता है कि लोग सचेत हो गए हैं… साथ ही यह लोगों के प्रजा से नागरिक बनने की गवाही भी देता है।”

पाठ्यपुस्तक, पृष्ठ 72

★★ **“प्रजा चुप रहती है — नागरिक सवाल पूछता है।”**

नन्नू की कहानी — RTI की ताक़त (अभ्यास 8) ★

1. **कौन**
   पूर्वी दिल्ली की झुग्गी बस्ती का दिहाड़ी मजदूर नन्नू

2. **समस्या**
   राशन कार्ड गुम; जनवरी 2006 में डुप्लीकेट की अ़र्ज़ी

3. **तीन महीने**
   दफ़्तर के चक्कर — कोई देखने तक को तैयार नहीं

4. **★फिर**
   सूचना के अधिकार से माँगा — अ़र्ज़ी की दैनिक प्रगति, अधिकारियों के नाम, कार्रवाई का ब्यौरा

5. **हफ़्ते भर में**
   इंस्पेक्टर घर आया — “तुम्हारा राशन कार्ड तैयार है”

6. **अगले दिन**
   बड़े अधिकारी ने गर्मजोशी से स्वागत, चाय — और आग्रह: “आवेदन वापस ले लें”

★★एक दिहाड़ी मजदूर ने **बिना पैसे, बिना पहचान** — केवल एक अधिकार से व्यवस्था झुका दी। **यही “प्रजा से नागरिक बनना” है।**

“वोट का असर पड़ता है” — मानने वाले

67

नेपाल 75 · भारत 67 · बांग्लादेश 66 · श्रीलंका 65 · पाकिस्तान 50 · दक्षिण एशिया 65

“आज **अधिकांश लोग मानते हैं कि सरकार की चाल-ढाल पर उनके वोट से असर पड़ता है।**”

दोहराइए

यही पूरा अध्याय है

पूरा तुलन-पत्र — पाँच खाते ★★

खाता	किताब का फ़ैसला
शासन	मिला-जुला — पर ★**वैधता में निर्विवाद विजेता**
संवृद्धि	थोड़ा पीछे *(3.95/4.42)* — पर **गरीबों में बराबर** *(4.28/4.34)*
असमानता	! **“ज़्यादा सफल नहीं”**
सामंजस्य	★**“सबसे अच्छा”** — दो शर्तों से
गरिमा	★★**“काफ़ी आगे”**

इन्हें पहले से ठीक कर लीजिए

जहाँ बच्चे मार खाते हैं ध्यान

ग़लती	सही
चार्ट 1 से “**तानाशाही बेहतर**”	★गरीब देशों में “**अंतर लगभग समाप्त**” + अन्य फ़ायदे
“असमानताएँ **समाप्त** कर दीं”	**“बनी रहती हैं”** *(प्रश्न 5, 7)*
“**बहुसंख्यकों का शासन** = लोकतंत्र”	**अनुरूप नहीं** *(प्रश्न 6 का उत्तर)*
“वैध” = क़ानूनी	**“लोगों की अपनी शासन व्यवस्था”**
शिकायतें = **विफलता**	**उल्टा** — “सफलता की गवाही”

और पूरी किताब की पाँच पंक्तियाँ ★★

5

अ.1 — “सत्ता की साझेदारी **लोकतंत्र की आत्मा** है”

अ.2 — “संघवाद **रोज़ चलाई जाने वाली आदत** है”

अ.3 — “हर व्यक्ति की **पहचान अलग-अलग** होती है”

अ.4 — “समाधान — **ज़्यादा और बेहतर राजनीति**”

अ.5 — “शिकायत — **प्रजा से नागरिक बनने की गवाही**”

★★पाँचों में एक ही बात — **“लोकतंत्र व्यवस्था नहीं, भागीदारी है। वह उतना ही अच्छा होता है जितने अच्छे उसके नागरिक।”**

विदाई

आठ साल बाद तुम सब मतदाता होगे। यह पूरी किताब उसी दिन की तैयारी थी। और उस दिन याद रखना — शिकायत करना ही सबूत है कि तुम प्रजा नहीं, नागरिक हो।

लोकतांत्रिक राजनीति · कक्षा 10 · समाप्त

मरुशाला की कहानी

दो शिक्षक, एक मरुशाला



भरत चौधरी

व्याख्याता

रा.उ.मा.वि. जेठन्तरी · ब्लॉक समदड़ी, जिला बालोतरा



वनिता कुमारी

व्याख्याता

रा.उ.मा.वि. रामसीन मूंगड़ा · ब्लॉक एवं जिला बालोतरा

फ़ोन के कैमरे से स्कैन कीजिए

यह स्लाइड शो ऑनलाइन

marushala.com/teach/slides/class-10/political-science/loktantra-ke-parinaam

विद्यार्थियों के लिए रिवीजन नोट्स

marushala.com/notes/class-10/political-science/revision-notes/loktantra-ke-parinaam

MARUSHALA **marushala.com** निःशुल्क · बिना लॉगिन · हिन्दी और अंग्रेज़ी